Episode no 15

(Conservation Practices)

हैप्पी बर्थडे...सृष्टि...

आलेख व अनुसंधान– डॉ. अनुराग शर्मा

दृश्य 1

(पार्टी से जुड़ी आवाजें...बच्चों की आवाजें...शोर मच रहा है...)

मीरा– चलो सृष्टि केक काटो...आओ...सब आ जाओ...सृष्टि केक काट रही है...

सृष्टि– मम्मी नूतन दीदी को तो बुलाओ...

एक आवाज– हां भई अपनी नूतन दीदी के बगैर सृष्टि कुछ नहीं करती...

नूतन– सृष्टि तेरे पीछे ही तो खड़ी हूं...चल अब जल्दी कैंडल्स बुझा...

–हंसी–

एक आवाज– मीरा आज डॉ. साहब नजर नहीं आ रहे...कहीं गए हैं क्या?

मीरा– हां मिसेज गुप्ता, डॉ. साहब आज रात की फिलाइट से लौटेंगे...हां सृष्टि तैयार...

(सब तालियां बजाते हैं और गाते हैं...)

सभी एक साथ– हैप्पी बर्थडे टू यू...हैप्पी बर्थडे डीयर सृष्टि...हैप्पी बर्थडे...

– धीरे–धीरे आवाजें कम होती हैं दृश्य परिवर्तन का संगीत...

दृश्य 2

सृष्टि– नूतन दीदी कितने गिफ्ट मिलें और सबसे अच्छा तो ये गिफ्ट है जिसमें पानी भरने और थोड़ा नमक डालने पर घड़ी चलने लगती है...

नूतन– और ये जिसमें सोलर सैल से पंखा चलता है?

सृष्टि– हां दीदी ये भी बहुत अच्छा है...

मां– चलो अब सो जाओ, बाकी के गिफ्ट सुबह देख लेना...

सृष्टि– मम्मी अभी नींद नहीं आ रही...चलो बातें करते हैं...तबतक पापा भी आ जाएंगे...

मां– 12 साल की हो गई है...इसकी तो बातें ही खत्म नहीं होती...अरे मुझे अपना प्रजेंटेशन भी तैयार करना है...

नूतन– तो मम्मी आप अपना प्रजेंटेशन तैयार करो...मैं और सृष्टि बाते करते हैं. ..आज सृष्टि का जन्मदिन है...सिर्फ उसी की चलेगी...

– हंसी–

सृष्टि– मम्मी आपका प्रजेंटेशन किस बात का है?

मां– मुझे जीवन में ऊर्जा संरक्षण के महत्व पर बोलना है...

सृष्टि– ओह एनर्जी कंजर्वेशन...

मां– हां...

सृष्टि– मां ये तो बहुत अच्छी बात है...पर आपको बोलना क्यों है...ऊर्जा बचाने के प्रयास भी करने चाहिए...

नूतन– अरे पहले बोलेंगे, सोचेंगे, समझेंगे फिर ही तो बचाएंगे...

सृष्टि– नूतन दीदी इसी बोलने के चक्कर में मुझे जैसे बच्चों की मुसीबत हो गई है...

मां– अच्छा...वो कैसे?

सृष्टि– मम्मो देखो बिजली...ऊर्जा बचानी है ये तो मैं भी जानती हूं और स्कूल में मैने भी पोस्टर लगाया है...

मां– क्या पोस्टर लगाया है?

सृष्टि– हमें ऊर्जा का संरक्षण करना चाहिए, फालतू में बिजली का उपयोग नहीं करना चाहिए, जब कमरे से बाहर जाएं तो बिजली के सभी स्विच बंद कर दें, सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग करें और कार पूल करें...

नूतन– शाबास सृष्टि...पर सृष्टि क्या ऐसा करने से एनर्जी बचेगी?

सृष्टि– हां दीदी, पहले आप बाथरूम की लाइट बंद करो...

नूतन– लो कर दी। मम्मी आप का एनजीओ तो लोगों के बीच में सीधे काम करता है तो हर बार प्रजेंटेशन क्यों? काम कब होगा? सृष्टि बिल्कुल ठीक कह रही है...

सृष्टि– थैंक्यू नूतन दीदी...बताओ मम्मी...

मां– भई हम लोग चर्चा करते हैं, फिर ऊर्जा बचाने की रणनीति बनाते हैं, फिर बजट बनाते हैं, फंड आता है और फिर हमारी टीम ग्राउंड पर पहुंच कर लोगों के बीच में काम करती है...

सृष्टि– ओह मम्मी, ऊर्जा बचाने के लिए कितनी ऊर्जा खर्च कर दी। अच्छा ये बताओ आपका प्रजेंटेशन कहां है?

मां– अं...रायपुर में...

नूतन– लो दिल्ली से रायपुर...क्या मम्मी आप सृष्टि को अभी भी बच्चा समझ रही हो...उसकी बात समझो...

सृष्टि– हा मम्मी मेरी बात समझो...आप दिल्ली से रायपुर हवाई जहाज या ट्रेन में जाओगी यानी ऊर्जा बचाने के लिए फिर ऊर्जा का खर्च...

मां– ठीक कहा बेटी, इसे ही तो कार्बन फुटप्रिंट कहते हैं...मतलब हम खुद कितना कार्बन का उत्सर्जन करते हैं...

नूतन– तो मम्मी आज तो टेक्नोलॉजी है तो क्यों ना आप लोग वीडियो कांफ्रेंसिंग कर लो...

सृष्टि– हां मम्मी आप वीडियो कांफ्रेंसिंग ही करो...आज पापा आ रहे हैं और आप कल चली जाओगी ये ठीक नहीं है आप वीडियो पर ही सबसे बात करो...

मां– पर...

नूतन– पर क्या मम्मी? आप अपने एनजीओ की हेड हो और पिछले 15 साल से आप बेहद मेहनत और सफलता से इसे चला रही हो...अब आप वाकई में ऊर्जा संरक्षण भी करना शुरू करो...

मां– वैसे तुम दोनों ही ठीक कह रही हो...चलो मैं अपनी पूरी टीम और निवेशकों को एक मेल भेज देती हूं...

सृष्टि– यस वैरी गुड...

मां– (टाइप करते हुए)– वैसे तुम दोनों को क्या लगता है ऊर्जा संरक्षण के और क्या उपाय हो सकते हैं?

सृष्टि– मम्मी, मैने तो ऊर्जा बचाने में सबसे आगे रहने वालो की और ऊर्जा बचाने की बात कहने वाले पढ़े–लिखे और पैसों वालों में सबसे बड़ी समस्या देखी...

मां– वो कैसे सृष्टि?

सृष्टि– मम्मी, देखो अपनी नीलम आंटी और मौसाजी को हर पौधे...हर कीड़े–मकौडे की भी चिंता रहती है लेकिन गर्मी जरा भी बर्दाश्त नहीं...

नूतन– तो गर्मी बढ़ भी गई है ना सृष्टि...

सृष्टि– दीदी गर्मी सबके लिए बढ़ी है, हमारे स्कूल में विंटर और समर यूनिफार्म अलग क्यों है? अरे जब गर्मी हो तो कपड़े हल्के सूती पहनो और सर्दी में मोटे ऊनी कपड़े पहनों...

मां– हां, ये बात तो ठीक है...नीलम का एअरकंडिशनर तो बंद ही नहीं होता...

सृष्टि– वो ही तो मम्मी जैसे पसीना निकल आए तो पता नहीं क्या मुसीबत हो जाएगी। पर और देखो ना उनके फ्रिज में खाना भी भरा रहता है और तमाम तरह के विदेशी फल भी...

नूतन– हां ये तो है सृष्टि...नीलम आंटी के फ्रिज में फल तो बहुत बढ़िया रहते हैं...

सृष्टि– पर दीदी कहां के? हमें स्थानीय स्तर पर और हमारे आसपास होने वाले फल–सब्जियां को ही अपनाना चाहिए और सिर्फ मौसमी फलों का ही सेवन करना चाहिए...इसी से तो आपका...वो...क्या है...फुटप्रिंट...वो...

नूतन– कार्बन फुटप्रिंट...

सृष्टि– हां कार्बन फुटप्रिंट बढ़ता है...अब देखो ना हर मौसम में सेब तो मिल ही रहा है और अब तो मैने देखा तरबूज भी मिल रहा है जिसे प्रकृति ने गर्मियों के लिए बनाया था और इसी कारण ना सिर्फ ग्लोबल वार्मिंग में इजाफा हो रहा है बल्कि रोग भी बढ़ रहे हैं...

मां– हूं...सृष्टि तुम कह तो बिल्कुल ठीक रही हो...अधिकतर सेब तो कोल्ड स्टोर में रखा आ रहा है जिसमें शायद मिठास छोड़कर बाकी पोषक तत्व या तो नहीं है या बेहद कम हैं। और कोल्ड स्टोर में रखने के कारण लागत भी बढ़ गई है...

नूतन– मम्मी आप का एनजीओ तो गांव–देहात में काम करता है ना?

मां– हां नूतन हम ग्रामीणों को रोजगार और शिक्षा के साधन मुहैया कराने के साथ पर्यावरण के प्रति भी जागरुक कर रहे हैं...

नूतन– पर मां पर्यावरण तो शहरों का खराब हो रहा है, गाड़ियों, फैक्टरियों का धुंआ, जल संदूषण, वायु प्रदुषण, सभी कुछ तो शहरों की समस्या है तो फिर काम गांवों में इतना क्यों?

सृष्टि– दीदी बिल्कुल ऐस ही जैसे विकसित देश हमसे बीस गुना कार्बन डॉइऑक्साइड का उत्सर्जन करते हैं लेकिन ग्लोबल वार्मिंग को दोष हमारे सर मढ़ते हैं...

नूतन– मम्मी...आप जो काम कर रही हो वो तो बेहद जरूरी है लेकिन शहरों के लोगों को कौन समझाएगा...अभी गिला कूड़ा यानी जैव कूडा हरे कूड़ेदान और अजैव जैसे प्लास्टिक, टिन आदि कूड़ा नीले कूड़ेदान में... ये तो लोग समझ नहीं पा रहे...फिर ऊर्जा संरक्षण पर कहा ध्यान जाएगा...

सृष्टि– मम्मी अभी देखो ना नरेश अंकल के बेटे वरुण भइया ने कितनी बड़ी एसयूवी गाड़ी ली और हमें दिखाने के लिए कितनी दूर गाड़ी चला कर लाए...मुझे तो बहुत बुरा लगा...

मां– क्यों सृष्टि बुरा क्यों लगा? वरुण भइया की पहली कार है...

सृष्टि– मम्मी एक तो वरुण भइया किसी को अपनी गाड़ी में बैठाते नहीं और उसपर इतनी बड़ी गाड़ी...पता है कितना प्रदूषण होगा...

नूतन– होगा क्या, हो रहा है...पर इन गाड़ियों में अंदर एअर प्यूरिफायर है... मतलब अंदर की हवा साफ लेकिन बाहर कितना भी प्रदूषण हो...इससे ना तो कंपनियों को फर्क पड़ता है और ना उपभोक्ता को...

सृष्टि– अच्छा मम्मी एक बात बताओ...कांच अपने में उष्मा सोखता है ना?

मां– हां...हां...इसीलिए तो पौधों के लिए ग्लास हाउस बनाते हैं जिससे रोशनी भी मिले, उष्मा भी बनी रहे और नमी भी बनी रहे और पूरा वातावरण कंट्रोल में रहे...

नूतन– हां ठीक वैसे जैसे गर्मियों में हम कार में घुसते हैं तो गर्मी का एक भभका लगता है...वो कांच क द्वारा उष्मा कार में रुक जाती है...बिल्कुल ग्रीन हाउस प्रभाव की तरह...

सृष्टि– हां...और शायद इसीलिए ठंडे देशों में लोग कांच के भवन या घरों में अधिक कांच का उपयोग करते हैं जिससे उष्मा घर में बनी रहे...

मां– हां सृष्टि बिल्कुल ठीक...

सृष्टि– मम्मी तो हमार देश...जिसे गर्म देश कहा जाता है यहां कांच की बिल्डिंग क्यों बनने लगीं? अब तो लोग अपने घरों में भी खूब कांच लगाते हैं...पूरी की पूरी दीवार ही कांच की होती है...और फिर इन गर्म बिल्डिगों, घरों को ठंडा करने के लिए खूब एसी चलाया जाता है...अब बताआ दिखावे में रहे तो कैसे बचेगी ऊर्जा...

नूतन– ठीक कहा सृष्टि... ऊर्जा बचाने में भवनों का ग्रीन डिजाइन भी बहुत जरुरी है। अब तो भवनों को एनर्जी ऑडिट भी किया जाने लगा है... मतलब भवन में कितनी ऊर्जा की बचत हो रही है और कितनी और बचत करने की संभावना ह, सबकी जांच की जाती है...

मां– हां नूतन, ये तो सही है, हमारा एनजीओ भी एनर्जी ऑडिट में मदद करता है। इसके अलावा हम सौर ऊर्जा को भी बढ़ावा दे रहे हैं और

लोगों को जागरुक भी कर रहे हैं...जैसे छत पर लगने वाली सोलर पैलन के लिए सरकार की ओर से सब्सिडो भी दी रही है...

सृष्टि– पर मम्मी अभी भी दिल्ली, गुरूग्राम, नोएडा आदि शहरों की बड़ी सोसायटियों में कहां लोगों ने सौर ऊर्जा को अपनाया है...ज्यादा से ज्यादा सोलर गीज़र लगवा लिए हैं और बहाना ये है कि मेंनटेंनेंस बहुत है...

नूतन– ठीक कहा सृष्टि, मम्मी मुझे तो लगता है कि बिल्कुल थॉमस एडिसन वाला किस्सा हो रहा है...

मां– थॉमस एडिसन वाला किस्सा? वो क्या नूतन?

नूतन– वो बगल वाली सोसायटी के संजय अंकल बता रहे थे कि वो अपनी सोसायटी की बाउंड्री की लाइट को सोलर करवाना चाहते थे पर किसी अधिकारी ने मदद नहीं की उल्टा उनसे कहा कि आपके यहां तो बिजली आती है आपको सोलर की क्या जरूरत, ये तो उनके लिए है जिनके पास ग्रिड की सुविधा ना हो...बेचारे संजय अंकल अभी तक चक्कर काट रहे हैं...

सृष्टि– पर दीदी इसमें थॉमस एडिसन कहां से आए?

नूतन– अरे सृष्टि जब थॉमस एडिसन ने न्यूयॉर्क को बिजली से रौशन की बात कही तो तेल कंपनियों ने उनपर केस कर दिया था कि ऐसा संभव नहीं है और बिजली बहुत खतरनाक है। मुझे लगता है ठीक ऐसे ही बिजली कंपनियां अपने पर लोगों की बढ़ती ऊर्जा निर्भरता को क्यों कम होने देंगी...सौर ऊर्जा तो लोगों को जिद करके अपनानी होगी और इसमें सरकार भी तो साथ है...

सृष्टि– हां दीदी... और मम्मी के एनजीओ जैसे संगठन भी...

–हंसी–

मां– सृष्टि जन्मदिन होने का पूरा फायदा ले रही है...अब सो जाओ...

सृष्टि– मम्मी पापा को तो आने दो...

नूतन– मम्मी जब हम ऊर्जा संरक्षण की बात करते हैं तो परिवहन और बिजली के उपकरण भी तो महत्वपूर्ण हैं ना?

मां– और क्या नूतन, तभी तो सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में सुधार किया जा रहा है जैसे मेट्रो रेल और बिजली के उपकरणों के लिए स्टार दिए जाना...

सृष्टि– हां जितने अधिक स्टार उतनी अधिक बिजली की बचत...

नूतन– पर उतनी कीमत भी...मम्मी क्या ऐसा नहीं होना चाहिए कि पांच स्टार से नीचे के उपकरण बिके ही ना?

मां– ऐसा तो मुश्किल है क्योंकि टेक्नोलॉजी तो हमेशा आगे बढ़ती रहेगी... लेकिन लोगों की सुविधाओं का ख्याल भी रखना होगा...जो नई टेक्नोलॉजी आएगी वो पहले से महंगी होगी क्योंकि कंपनी ने टेक्नोलॉजी में निवेश किया है...और हो सकता है अधिक लोग उसे वहन ना कर पाएं...

सृष्टि– पर नियम तो बनाने पड़ेंगे ना?

नूतन– तो सृष्टि बने तो हैं नियम, तीन स्टार, चार स्टार, पांच स्टार रेटिंग, गुड मैन्यूफैक्चरिंग प्रैक्टिस, और भी कई मानक हैं...सब पर्यावरण सुरक्षा और ऊर्जा संरक्षण के लिए ही तो है...

मां– लेकिन अभी भी बहुत काम होना है...जैसे अगर इलैक्ट्रिक कारें अपनानी हैं तो चार्जिंग स्टेशन भी होने चाहिए...और नई टेक्नोलॉजी भी जैसे मेट्रो रेल में ब्रेक लगने पर काइनेटिक एनर्जी रिकवरी सिस्टम लगा है यानी ब्रेक लगने पर भी ऊर्जा का संरक्षण होता है और वो रेल चलाने के काम आती है...

सृष्टि– अच्छा मम्मी ये नए तरह के बल्ब जैसे सीएफएल और एलईडी ये सब भी तो ऊर्जा बचाने में सहयोग करते हैं...

नूतन– बिल्कुल ठीक कहा सृष्टि एलईडी बल्ब तो सामान्य गोल बल्ब की तुनला में करीब नब्बे फीसदी तक बिजली बचाता है...इसीलिए सरकार तो बेहद सस्ते दामों पर लोगों को एलईडी बल्ब उपलब्ध करा रही है... बस अपना बिजली का बिल ले जाओ और एलईडी घर ले आओ...

सृष्टि– अरे वाह दीदी ये तो विज्ञापन हो गया...बिल लाओ, एलईडी पाओ...

–हंसी–

मां– भारत में पेट्रोलियम कंर्स्वेशन रिसर्च एसोसिएशन यानी पीसीआरए तो ऊर्जा सरक्षण के लिए कई विज्ञापन और रेडियो, टीवी में कार्यकम भी देती है और ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी तो ऊर्जा दक्षता और संरक्षण के लिए है ही...

सृष्टि– अच्छा मम्मी एक बात बताओ, नूतन दीदी सुबह अखबार पढ़कर बता रही थीं कि हमारा भोजन अब उतना पौष्टिक नहीं रहा...मतलब हमारे खाने में कई पोषक तत्वों की कमी आ गई है...

नूतन– हां सृष्टि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन ने अपनी एक रिपोर्ट में ये बताया है और उसका कारण मिट्टी में कम होते जा रहे पोषक तत्वों के कारण फल, अनाज और सब्जियों के पोषण गुणों में भी कमी आई है...

सृष्टि– तो दीदी इसका क्या ऊर्जा संरक्षण से भी आपको कुछ संबंध नजर आया?

मां– सृष्टि इसका ऊर्जा संरक्षण से अधिक हमारे खेती के तरीकों से मतलब है...

सृष्टि– हां मम्मी, वो ही तो...खेती में अब ऊर्जा अधिक लगने लगी है जैसे रासायनिक खाद बनाने में ऊर्जा खर्च, उसे खेत तक ले जाने में ऊर्जा का खर्च, फिर रासायनिक कीटनाशी का प्रयोग भी तो है...

नूतन– तुम कहना क्या चाह रही हो सृष्टि?

सृष्टि– अरे दीदी, ये ही काम तो मम्मी का एनजीओ और अन्य कई एनजीओ भी तो कर रहे हैं जो ऑर्गेनिक खेती यानी जैविक खेती को बढ़ावा दे रहे हैं...

मां– अरे हां, इसमें खेत के अपशिष्ट, गोबर, आदि से खाद और जैविक कीटनाशी भी तैयार किए जाते हैं...

सृष्टि– यानी खेत का सब वापस खेत में... तो हुई ना ऊर्जा की बचत और मिले ना सभी पोषक तत्व...

नूतन– अरे, हां और बायो गैस भी तो है...

सुष्टि– तो हुई ना ऊर्जा की बचत...

मां– अरे हां, आधुनिक खेती में तीन रसायन नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम पर ही आधारित थी जबकि गोबर खाद या केंचुआ खाद से तो सभी 16 पोषकतत्व फसल को प्राप्त होते हैं...

सृष्टि– यानी अगर जैविक खेती की होती तो ना हमारा खाना कमजोर होता, ना मिट्टी और सबसे बड़ी बात ऊर्जा की कितनी बचत होती...

मां– नूतन...ये हमारी सृष्टि 12 साल की हुई है या 120 साल की...देखो कितनी समझदारी की बाते कर रही है...

–हंसी–

नूतन– हां मां और साथ में सभी बातें प्रासंगिक है...मुझे लगता है कि हमारा भविष्य सुरक्षित हाथों में है...

मां– हां जैसे तू तो बड़ी पचास साल की हो गई है...तू भी तो सिर्फ 15 की है...अब तो मुझ भी लगता है कि इस धरती का भविष्य... सुरक्षित हाथों में है...

सृष्टि– क्यों मम्मी?

मां– क्योंकि एक तो तुम दिखावे से दूर इस धरती का सोचते हो, लालच से दूर हो, प्रकृति व पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं का समाधान सोचत, जानते और समझते हो और शायद सबसे बड़ी बात सिर्फ बोलते ही नहीं उसे लागू करने की हिम्मत भी रखते हो...

नूतन– अरे मम्मी तुम्हारे मेल का जवाब आया कुछ?

(कंप्यूटर पर ठक–ठक की आवाजें...)

मां– हां देखती हूं...अरे वाह...लो आया गया जवाब...सभी वीडियो कांफंसिंग के लिए तैयार हैं...

– खुशी से चिल्लाते हैं–

नूतन– देखा मम्मी, सृष्टि ने कितना अच्छा रिटर्न गिफ्ट दिया...

मां– थैंक्स सृष्टि...

सृष्टि– वैलकम मम्मी...और हां मम्मी...अब आपके एनजीओ को वॉटर कंसर्वेशन यानी जल संरक्षण पर काम शुरू कर देना चाहिए खासतौर स शहरों में बसी सोसायटियों में...

मां– हां भई, गांव में भी पानी बचाएंगे और शहरों में भी...

नूतन– (नारे की तरह) खेत का पानी खेत में और शहर का पानी शहर में...

सृष्टि– (नारे की तरह) गर्मी में हल्के कपड़े पहनों, सर्दियों में खूब सारे गर्म कपड़े पहनो...

मां– (नारे की तरह) गर्मियों में बंद करो एसी और सर्दियों में बंद करो हीटर

सृष्टि– (नारे की तरह) मत टपकने दो नल, बंद करो बिजली के स्विच...

नूतन– (नारे की तरह) करो कार पूल, जाओ सार्वजनिक वाहन में

अपनाओ सौर ऊर्जा, बड़ी गाडियां रखो ताले मं...

सृष्टि– वाह नूतन दीदी, ये तो शेर हो गया...

मां– अं...अब खेतों में बनाए खुद बिजली और खाद हर दिन

शहरों में घटे कूड़ा, मने सृष्टि का हर रोज जन्मदिन...

नूतन, सृष्टि– एकसाथ– वाह...वाह...

(घंटी की आवाज...)

सृष्टि– पापा आ गए...

(दरवाजा खुलने को आवाज...)

नूतन– पापा...कैसे हो...

पापा– अरे वाह, सब जगे हुए हो...तभी इतना शोर आ रहा था...और सृष्टि... हैप्पी बर्थडे...

–हंसी–

नूतन– पापा सृष्टि तो आपसे मिलने के लिए ही जगी हुई थी और आज इसने जो मुझे और मम्मी को ऊर्जा बचाने के बारे में समझाया है...बस पूछो मत...

मां– आप सृष्टि के लिए बर्थडे का क्या गिफ्ट लाए...

पिता– कुछ नहीं...

नूतन और मां एक साथ– हैं, कुछ नहीं और वो भी जापान से?

पिता– अरे सृष्टि ने कहा था कि कुछ नहीं लाना, पैसे बचाना और सब कल साथ खाने पर जाएंगे...

– हंसी–

मां– अरे वाह सृष्टि तो सच में बहुत समझदार हो गई है...तो कल कहीं जाना क्यों हैं...मैं तुम्हारा मनपसंद खाना घर पर ही बना देती हूं...

सृष्टि– अरे वाह मम्मी...

–हंसी–

पिता– पर मीरा तुम्हे तो कल जाना हैं ना...रायपुर?

नूतन– अरे...घर पर ना रहने का यही नुकसान होता है...मम्मी का जाना कैंसल पर मिटिंग कैंसल नहीं हुई है और वो भी सृष्टि के कारण...

पिता– अरे, वाह...वो कैसे?

मां– अब कल पूछना, मुझे सोना है और अगर आपने इससे कुछ पूछा तो सुबह तक ये चुप नहीं होगी...

–हंसी–

पिता– चलो तुम सो जाओ। मैं और सृष्टि बात करत हैं...कई दिन से सृष्टि के साथ बात नहीं हुई...

नूतन– लो सृष्टि के मजे आ गए...कोई बात करने वाला तो मिला...–हंसी–

सृष्टि– तो पापा आज हम सृष्टि की बात करेंगे...

पिता– तुम्हारी...अं...ठीक है...

सृष्टि– नहीं पापा, सृष्टि की, प्रकृति की...इस संसार की...

पिता– (घबराकर) मीरा, ये सृष्टि 12 साल की हुई है ना? ऐसी समझदारी की बातें?

मीरा और नूतन एक साथ– वेलकम पापा, हैप्पी बर्थडे सृष्टि...

–सम्मलित हंसी–

–समाप्त–